ISBN : 978-81-920597-1-6

कृति : शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक : प्रो. बी. एल. जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूं 341306 (राजस्थान)

सम्पादक मण्डल : डॉ. मनीष भटनागर, डॉ भावग्राहीप्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ गिरधारी लाल शर्मा

संस्करण : मई, 2018 (प्रथम)

मूल्य : 200/-

प्रकाशन : महावीर पथ पब्लिकेशन
(प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान)
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
Ph. 7220089301, 7220089302,
www.pvjss.com, email: pvjss108@gmail.com

कम्प्यूटराईज्ड : वैशाली ग्राफिक्स, लाडनूं

मुद्रक : जैन कम्प्यूटर, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान)

Scanned by CamScanner

अध्यापक शिक्षा की समस्याएं

डॉ. मनीष भटनागर

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएँ और तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है, और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है।

किसी भी राष्ट्र या समाज का हित उसके अन्तर्गत कार्य करने वाले शिक्षकों के ऊपर निर्भर होता है। कोई भी राष्ट्र या समाज अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है। अध्यापक ही समाज एवं राष्ट्र को एक सम्माननीय स्तर तक उठा सकता है और नकारात्मक भूमिका के चलते समाज व राष्ट्र को पतन की राह दिखा सकता है। आने वाली पीढ़ी का निर्माण करने का पूरा उत्तरदायित्व वर्तमान समय के अध्यापकों के ऊपर आ जाता है वे ही भविष्य में राष्ट्र एवं समाज के लिए नागरिकों का निर्माण करते हैं। अध्यापकों को एक श्रेष्ठ स्तर पर ले जाकर ही राष्ट्र व समाज अपनी उन्नति कर सकता है। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि शिक्षा का स्तर, उसके योगदान को जितनी भी बातें प्रभावित करती है उनमें सबसे महत्वपूर्ण घटक अध्यापकों का गुण, क्षमता, नैतिक और चारित्रिक सुदृढ़ता होता है।

अध्यापकों का निर्माण करने वाली संस्थाएं जो शिक्षक शिक्षा अथवा अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के नाम से जानी जाती है को समाज एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप होना अत्यन्त आवश्यक होता है। जिस किसी प्रक्रिया से अध्यापक शिक्षा में संलग्न संस्थाएँ एवं व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान शिक्षा के लिए अध्यापकों का निर्माण करने में दे सकेंगे उसी के अनुरूप अध्यापक शिक्षा का विकास होगा और साथ ही योग्य अध्यापक समाज एवं राष्ट्र को उन्नति की दिशा प्रदान कर सकेंगे।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि सम्पूर्ण राष्ट्रीय विकास की भावना को दृष्टिगत रखते हुए अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम को अत्यन्त उच्च स्तर का एवं गुणवत्तापूर्ण बनाया जाये जिससे समाज एवं राष्ट्र हित में श्रेष्ठतम विकास की स्थिति उत्पन्न हो सके। इसके लिए शिक्षकों की शिक्षा के लिए समुचित प्रबन्ध करते हुए इन शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की समस्याओं को जानना एवं उन्हें दूर करना अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

Scanned by CamScanner